# 15 तुम कब जाओगे अतिथि?

**क्या आप जानते हैं...**

*हमारे देश में अतिथि को देवता की उपाधि दी जाती है! लोग अपने घर आए अतिथियों को बड़े आदर-भाव के साथ सम्मान देते हैं। अतिथि को भी चाहिए कि वह अपने इस सम्मान को बचाए रखे अन्यथा सौन्दर्यपूर्ण व्यवहार बोरियत में परिवर्तित होने लग जाता है।*

*प्रस्तुत रचना के लेखक शरद जोशी हिन्दी के जाने-माने व्यंग्यकार हैं। उन्होंने अपनी रचना के माध्यम से उन लोगों पर करारा व्यंग्य किया है जो अतिथि के रूप में घर आकर वापस जाने का नाम नहीं लेते। बढ़िया भोजन और मखमली बिस्तर पाकर मानो चिपक ही जाते हैं। ऐसे अतिथि जो गृहस्वामी के जीवन को नर्कतुल्य बना देते हैं वे लेखक को देवता नहीं राक्षस नजर आते हैं। इन्हें देखकर लेखक के अन्तर्मन से यही आवाज आती है कि 'तुम कब जाओगे अतिथि?'*

तुम्हारे आने के चौथे दिन, बार-बार यह प्रश्न मेरे मन में उमड़ रहा है, तुम कब जाओगे अतिथि? तुम कब घर से लोगे मेरे मेहमान?

तुम जिस सोफे पर टाँगे पसारे बैठे हो, उसके ठीक सामने एक कैलेण्डर लगा है जिसकी फड़फड़ाती तारीखें मैं तुम्हें रोज दिखाकर बदल रहा हूँ। यह मेहमाननवाजी का चौथा दिन है, मगर तुम्हारे जाने की कोई सम्भावना नजर नहीं आती। लाखों मील लम्बी यात्रा करके एस्ट्रोनॉट्स भी चाँद पर इतना नहीं रुके जितना तुम रुके। उन्होंने भी चाँद की इतनी मिट्टी नहीं खोदी जितनी तुम मेरी खोद चुके हो।

के घर मेहमान को कौन-सा दिन था?

क्या तुम्हें अपना घर याद नहीं आता? क्या तुम्हें तुम्हारी मिट्टी नहीं पुकारती?

जिस दिन तुम आए थे, कहीं अन्दर-ही-अन्दर मेरा बटुआ काँप उठा था। फिर भी मैं मुस्कराता हुआ उठा और तुम्हारे गले मिला। मेरी पत्नी ने तुम्हें सादर नमस्ते की। तुम्हारी शान में ओ मेहमान, हमने दोपहर के भोजन को लंच में बदला और रात के खाने को डिनर में। हमने तुम्हारे लिए सलाद कटवाया, रायता बनवाया और मिठाइयाँ मँगवाईं, इस उम्मीद में कि दूसरे दिन शानदार मेहमाननवाजी की छाप लिए तुम रेल के डिब्बे में बैठ जाओगे। मगर आज चौथा दिन है और तुम यहीं हो। कल रात हमने खिचड़ी बनाई, फिर भी तुम यहीं हो। आज हम उपवास करेंगे और तुम यहीं हो। तुम्हारी उपस्थिति यों रबर की तरह खिंचेगी, हमने कभी सोचा न था।

परसों तुम आए और बोले, "लॉण्ड्री को कपड़े देने हैं।" मतलब? मतलब यह कि जब तक कपड़े धुलकर नहीं आएँगे, तुम नहीं जाओगे? यह चोट मार्मिक थी, यह आघात अप्रत्याशित था। मैंने पहली बार जाना कि अतिथि केवल देवता नहीं होता। वह मनुष्य और कई बार राक्षस भी हो सकता है। यह देख मेरी पत्नी की आँखें बड़ी-बड़ी हो गईं। तुम शायद नहीं जानते कि पत्नी की आँखें जब बड़ी-बड़ी होती हैं, मेरा दिल छोटा-छोटा होने लगता है।

की पत्नी की आँखें -बड़ी होती हैं, तब ा है?

कपड़े धुलकर आ गए और तुम यहीं हो। पलंग की चादर दो बार बदली जा चुकी और तुम यहीं हो। अब इस कमरे के आकाश में ठहाकों के रंगीन गुब्बारे नहीं उड़ते। शब्दों का लेन-देन मिट गया। अब करने को कोई चर्चा नहीं रही। परिवार, बच्चे, नौकरी, राजनीति, रिश्तेदारी, पुराने दोस्त, फिल्म, साहित्य, यहाँ तक कि हमने पुराने किस्सों का भी जिक्र कर लिया। सारे विषय खत्म हो गए। तुम्हारे प्रति मेरी प्रेम-भावना गाली में बदल रही है। मैं समझ नहीं पा रहा कि तुम कौन-सा फेवीकोल लगाकर मेरे घर में आए हो!

लेखक की प्रेम-भावना किसमें बदल रही है?

पत्नी पूछती है, "कब तक रहेंगे?" जवाब में मैं कन्धे उचका देता हूँ। जब वह प्रश्न पूछती है, मैं उत्तर नहीं दे पाता। जब मैं पूछता हूँ, वह चुप रह जाती है। तुम्हारा बिस्तर कब गोल होगा अतिथि?

मैं जानता हूँ कि तुम्हें मेरे घर में अच्छा लग रहा है। सबको दूसरों के घर में अच्छा लगता है। यदि लोगों का बस चलता तो वे किसी और के घर रहते। "मगर घर को सुन्दर और होम को स्वीट होम इसीलिए कहा गया है कि मेहमान अपने घर वापस लौट जाएँ।

यदि लोगों का वश चलता तो वे क्या करते?

मेरी रातों को अपने खर्राटों से गुँजाने के बाद अब चले जाओ मेरे दोस्त! देखो, शराफत की भी एक सीमा होती है और 'गेट आउट' भी एक वाक्य है जो बोला जा सकता है।

अतिथि! कल का सूरज तुम्हारे आगमन का चौथा सूरज होगा। और, वह मेरी सहनशीलता की अन्तिम सुबह होगी। उसके बाद मैं लड़खड़ा जाऊँगा। यह सच है कि अतिथि होने के नाते तुम देवता हो, मगर मैं भी आखिर मनुष्य हूँ। एक मनुष्य ज्यादा दिनों देवता के साथ नहीं रह सकता! देवता का काम है कि वह दर्शन दे और लौट जाए।

तुम लौट जाओ अतिथि। इसके पूर्व कि मैं अपनी गाली पर उतरूँ, तुम लौट जाओ।

उफ्! तुम कब जाओगे अतिथि?

—शरद जोशी

**लेखक परिचय**

प्रसिद्ध व्यंग्यकार **शरद जोशी** का जन्म सन् 1931 में उज्जैन (मध्य प्रदेश) में हुआ था। अपनी रचनाओं के माध्यम से इन्होंने न केवल राजनीतिक घटनाओं पर व्यंग्य किया है, बल्कि आम जिन्दगी से जुड़ी स्थितियों को भी निशाना बनाया है। शरद जी की रचनाएँ हँसाती-गुदगुदाती बहुत कुछ कह जाती हैं। एक था गधा, एक थिलाते बैठ, जादू की सरकार आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

... करना (fasting); धार्मिक ... अर्थ ... श्रेष्ठ आचरण

Let's Do Exercise

## पठन एवं लेखन अभिव्यक्ति

### आपकी कलम से — Questions relating Text

श्रुतलेखन/Dictation

1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण करते हुए पुनः लिखिए–

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| एस्ट्रोनाइट्स | मेहमाननवाजी | लॉण्डी | शराफत | अतिथि |
| ..... | ..... | ..... | ..... | ..... |
| ..... | ..... | ..... | ..... | ..... |

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) अतिथि कितने दिनों से लेखक के यहाँ ठहरा हुआ था?
(ख) "जिस दिन तुम आए थे, कहीं अन्दर-ही-अन्दर मेरा बटुआ काँप उठा था।" लेखक ने ऐसा क्यों कहा?
(ग) अतिथि की किन हरकतों से लगता है कि वह जाने का नाम नहीं ले रहा?
(घ) "दोपहर के भोजन को लंच में बदला और रात के खाने को डिनर में।" इस पंक्ति से लेखक का क्या अभिप्राय है?
(ङ) लेखक ने अतिथि को घर से चले जाने के लिए क्या-क्या संकेत दिए?
(च) अनुमान लगाइए कि 'अतिथि' शब्द कैसे बना होगा? HOTS
(छ) इस पाठ का एक मजेदार-सा शीर्षक सोचकर लिखिए।

3. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) तुम्हारी उपस्थिति यों रबड़ की तरह खिंचेगी, हमने कभी सोचा न था।
(ख) इस कमरे के आकाश में ठहाकों के रंगीन गुब्बारे नहीं उड़ते। शब्दों का लेन-देन मिट गया।
(ग) शराफत की भी एक सीमा होती है और 'गेट आउट' भी एक वाक्य है जो बोला जा सकता है। "यह सच है कि अतिथि होने के नाते तुम देवता हो, "मगर देवता का काम है कि वह दर्शन दे और लौट जाए।

4. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) मेहमान को दिनों की याद दिलाने के लिए लेखक क्या करता था?
(i) कैलेण्डर की तारीख बदलता था ☐ (ii) उँगलियों पर दिन गिनता था

(ख) लेखक ने पहली बार क्या जाना?
(i) अतिथि केवल देवता नहीं होता ☐ (ii) अतिथि केवल देवता होता है

(ग) लेखक की सबसे बड़ी चिन्ता क्या थी?
(i) अतिथि कब जाएगा? ☐ (ii) दूसरा अतिथि कब आएगा?

### पाठ्यांश से — Questions relating Paragraph

5. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

जिस दिन तुम आए थे, कहीं अन्दर-ही-अन्दर मेरा बटुआ काँप उठा था। फिर भी मैं मुस्कराता हुआ उठा और तुम्हारे